Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

दमोह जिले के पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध संरचनात्मक सुविधाओं का अध्ययन

ललित ताम्रकार* डॉ. आभा वार्ष्णेय**

* शोधार्थी, भूगोल जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक, कमला राजा महिला महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – पर्यटन किसी भी क्षेत्र की आर्थिक और सांस्कृतिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दमोह जिला प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक धरोहरों और धार्मिक स्थलों से भरपूरहै।परंतुसंरचनात्मक सुविधाओं की कमी के कारण यह क्षेत्र अपेक्षित पर्यटन विकास प्राप्त नहीं कर सका है।

इतिहास में जाकर यदि देखा जाए तो हमें यह पता चलता है कि इस जिले का पुराना नाम तुंडीकेर था तथा इसे अपना वर्तमान नाम राजा नल की पत्नी रानी दमयंती के नाम से मिला।14वीं शताब्दी में दमोह मुगलों के अधिकार क्षेत्र में रहा तत्पश्चात 15वीं शताब्दी में गौड़ शासक संग्राम शाह ने दमोह को अपने साम्राज्य में शामिल किया। बुंदेलो और मराठों का भी कुछ समय इस क्षेत्र पर अधिकार रहा। इस प्रकार अपने समृद्ध इतिहास के साथ दमोह जिले ने अपना वर्तमान स्वरूप प्राप्त किया। यही कारण है कि यहां पर ऐतिहासिक अवशेष बिखरेपड़े हुए हैं, जिनके उचित रखरखाव से लाभ प्राप्त किया जा सकता है। परंतु वर्तमान में इस जिले के पर्यटन स्थल लाभ प्राप्त करने की स्थिति में नहीं है बल्कि अल्प विकसित होने के कारण आसपास के पर्यटकों के लिए भी अंजान बने हुए हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य स्थलों पर उपलब्ध आवश्यक संरचनात्मक सुविधाओं पर विमर्श करना है ताकि इन सुविधाओं की उपलब्धता में जो कमियां है उन पर प्रकाश डाला जा सके एवं भविष्य में इन कमियों को पूरा कर इस क्षेत्र में आदर्श पर्यटन स्थलों का विकास किया जा सके।

अनुसंधान प्रश्न

(अ) दमोह जिले के के पर्यटन स्थलों पर कौन–कौन सी संरचनात्मक सुविधा उपलब्ध हैं?
(ब) इन सुविधाओं में क्या कमियां है?
(स) इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ाने के लिए कौन–कौन से उपाय किए जा सकते हैं?

अनुसंधान विधि–यह शोध गुणात्मक प्रकृति का है। जिसके लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्योंका प्रयोग किया गयाहै।प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु सर्वेक्षण एवं क्षेत्रीय अवलोकन किया गया है तथा चयनित स्थानों पर आने वाले पर्यटकों से, आसपास के लोगों से, वहां के कर्मचारीयों आदि से साक्षात्कार करके भी शोधार्थी द्वारा गुणात्मक तथ्यों का संकलन किया गया है। जबकि द्वितीय तथ्यों के संकलन हेतु सरकारी रिपोर्ट, जिले की वेबसाइट, पत्र– पत्रिकाओं आदि का प्रयोग किया गयाहै।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय–दमोह जिला मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित है, जो 23° 09' उत्तरी अक्षांश से 24° 27' उत्तरी अक्षांश तक तथा 79°03' पूर्वी देशांतर से 79° 57' पूर्वीदेशांतर तक फैला है। इसका क्षेत्रफल 7306 वर्ग किलोमीटर है।यह जिला सोनार नदी के दक्षिण–पूर्व में लगभग 12 मील पठारी क्षेत्र में स्थित है तथा यह क्षेत्र 595 मीटर की औसत ऊंचाई में स्थित है।यह जिला भौगोलिक रूप से रीवा–पन्ना के पठारपर स्थित होने के कारण यहां की जलवायु उष्ण कटिबंधीय मानसूनी है। यहां गर्म और आर्द्र ग्रीष्म काल, मध्यम और शुष्क सर्दी तथा वर्षा का मौसम होता है। औसत वार्षिक वर्षा 125 सेंटीमीटर तथा गर्मियों और सर्दियों का औसत तापमान क्रमश: 35.5 डिग्री सेल्सियस तथा 12.5 डिग्री सेल्सियस रहता है।

यह जिला सागर संभाग के अंतर्गत आता है। यह जिला रेल तथा सड़क मार्ग द्वारा अपने आसपास के जिलों से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है।यह जिला पश्चिम में सागर से दक्षिण में जबलपुर और नरसिंहपुर से तथा पूर्व में पन्ना और कटनी से घिरा हुआ है। शहर का नाम पौराणिक हिंदू कथाओं के राजा नल की पत्नी दमयंती के नाम पर रखा गया है।

जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल एवं संरचनात्मक सुविधाओं की उपलब्धता

(अ)बांदकपुर–यह स्थान दमोह कटनी–मार्ग पर दमोह से लगभग 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसी स्थान पर भगवान जागेश्वर नाथ स्वयंभू रूप में स्थापित हैं इस कारण इस स्थान को जागेश्वर धाम भी कहा जाता है। इसी मंदिर परिसर में संस्कृत विद्यालय, मुंडन स्थल एवं विवाह मंडप बने हुए हैं यहां का संस्कृत विद्यालय भी अपने धार्मिक प्रशिक्षण हेतु प्रसिद्ध है।इस स्थान की मान्यता है कि महाशिवरात्रि पर सवा लाख कांवड़ियोंद्वारा लाए गए जल को भगवान शिव पर चढ़ाने से माता पार्वती तथा भगवान शिव के मंदिरों पर लगी दो–दो ध्वज जो माता पार्वती एवं भगवान शिव के प्रतीक हैं एक दूसरे की ओर झुककर आपस में मिलकर अपने आप बंध जाते हैं। इस साक्षात चमत्कार के दर्शन हेतु दर्शनार्थी लाखों की संख्या में यहां उपस्थित होते हैं।

यदि इस क्षेत्र के संरचनात्मक विकास की बात की जाए तो यह क्षेत्र रेल तथा सड़कों द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है लेकिन प्रसिद्ध स्थल होने के बाद भी यहां का रेलवे स्टेशन विकसित नहीं है तथा मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। मंदिर क्षेत्र तथा आसपास के क्षेत्र की बात की जाए तो पता चलता है कि मंदिर का बाहरी क्षेत्र पूर्णत: ग्रामीण है एवं स्वच्छता का अभाव है तथा बाहर से आने वाले पर्यटकों के लिए आवासीय सुविधा नहीं है। यह

क्षेत्र सिर्फ अपने धार्मिक महत्व के कारण ही प्रसिद्धि प्राप्त है किसी अन्य प्रकार के पर्यटन या भ्रमण क्षेत्र न होने के कारण इस क्षेत्र का पर्यटन सीमित है। यद्यपि यह स्थान आसपास के क्षेत्र में 13वें ज्योतिर्लिंग के रूप में विख्यात है परंतु फिर भी उचित प्रचार तथा मार्केटिंग केअभाव में यह क्षेत्र कम पर्यटक प्राप्त कर पा रहा है।

(ब) कुंडलपुर–यह स्थान जैन तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है। यह दमोह–पटेरा मार्ग पर दमोह से लगभग 45 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहां पहाड़ी के ऊपर तथा नीचे 58 जैन मंदिर बने हुए हैं जो 16वीं–17वीं शताब्दी में निर्मित माने जाते हैं यहां अंबिका मठ तथा रुक्मणी मठ नाम के दो राज्य संरक्षित स्मारक भी है जिसमें से रुक्मणी मठसे 2002 में चोरी हुई प्रतिमा को पुन: स्थापित कर दिया गया है। वैसे तो इस जगह पर मंदिरों वाले स्थान पर सभी प्रकार की सुविधा पर्याप्त रूप से उपलब्ध है पर मंदिर के चारों ओर का क्षेत्र अभी भी अविकसित और ग्रामीण अवस्था में है जिससे यह पता चलता है कि इस क्षेत्र के पर्यटन का लाभ स्थानीय लोगों को नहीं मिल पा रहा है। यहां विश्व भर से जैन धर्म के अनुयायियों का आगमन होता रहता है। विशेष मौकों पर यहां पर पर्यटकों की संख्या लाखों में भी पहुंच जाती है।

यहां के लोग मुख्य रूप से कृषि कार्य एवं अन्य ग्रामीण कार्यों द्वारा अपना जीवन बसर करते हैं। यदि सुरक्षा और स्वच्छता व्यवस्था को देखें तो यह क्षेत्र एक आदर्श क्षेत्र है यहां सुरक्षा हेतु पर्याप्त संख्या में सुरक्षा गार्ड तैनात होते हैं जो 24 घंटे यहां उपलब्ध होते हैं। यहां धार्मिक क्षेत्र की सीमा के अंदर पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ छना हुआ जल एवं भोजन की उपलब्धता है जो जैन रीति के अनुसार बनाया जाता है। यद्यपि यह क्षेत्र सड़क मार्ग द्वारा जिला मुख्यालय से ठीक तरह से जुड़ा हुआ है परंतु यहां पर रेल मार्ग अभी तक नहीं पहुंच पाया है जो वर्षों से यहां के लिए प्रस्तावित है। पर्यटकों के लिए आवासीय सुविधा भी पर्याप्त मात्रा में इस स्थान पर उपलब्ध है।

(स) सिंग्रामपुर–यह स्थान दमोह से लगभग 55 किलोमीटर की दूरी पर दमोह–जबलपुर मार्ग पर स्थित सिंग्रामपुर प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण एक मनोरम ग्रामीण क्षेत्र है।यह क्षेत्र ऐतिहासिक पर्यटन, पारिस्थितिक पर्यटन तथा धार्मिक पर्यटन को अपने आप में समेटे हुए हैं क्योंकि यहां बिल्कुल पास–पास ही कई पर्यटन स्थल स्थित है जिसमें सिंगौरगढ़ किला, निदान कुंड (भैंसा घाट), नजाराप्वाइंट, सद्भावना शिखर, रानी दुर्गावती अभयारण्य आदि प्रमुख है। सिंगौरगढ़ किला इस क्षेत्र का सर्वप्रमुख आकर्षण है रानी दुर्गावती इसी किले से अपना राज–काज देखा करती थीं।

सद्भावना शिखर विंध्य पर्वत श्रृंखला की सबसे ऊंची चोटी है जिसे कलुमर या कालुम्बे नाम से भी जाना जाता है। नजारा पॉइंट का नाम यहां से देखी जा सकने वाले जंगलों के विहंगम दृश्य के कारण पड़ा है जहां से सैकड़ो मीटर की ऊंचाई से सारे जंगल को देखा जा सकता है। निदान कुंड जलप्रपात (भैंसा घाट) भी अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है जहां से जल ऊंची पहाड़ी से सुंदर दृश्य बनाते हुए नीचे गिरता है। वैसे तो सिंग्रामपुर के सभी पर्यटन स्थल अपने में अपार संभावनाएं समेटे हुए हैं परंतु यह स्थान वर्तमान में अपनी योग्यता अनुसार पर्यटकों को प्राप्त नहीं कर सका है।

इसके अतिरिक्त यहां सुरक्षा व्यवस्था जंगली क्षेत्र होने के कारण एकदम शून्य है, जिससे हर समय इस क्षेत्र में पर्यटकों के लिए खतरा बना रहता है। यहां किसी भी प्रकार की आवासीय व्यवस्था नहीं है नही पर्यटकों हेतु आसपास खाने–पीने की सुविधा है अत: पर्यटकों को अपने साथ ही भोजन–पानी लाना पड़ता है। इन्हीं सब कठिनाइयों के कारण इस क्षेत्र में पर्यटन अपर्याप्त है।

(द) नोहलेश्वर मंदिर–यह स्थान दमोह से 24 किलोमीटर दूर दमोह–जबलपुर मार्ग पर स्थित नोहटा ग्राम में स्थित है। इस ग्राम में बड़ी संख्या में प्राचीन मंदिरों के ध्वंसावशेष देखे जा सकते हैं। इन सभी अवशेषों मेंनोहलेश्वर मंदिर प्रमुख है जो अभी भीअच्छी अवस्था में है। यह मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का संरक्षित स्मारक है। कलचुरी नरेश युवराज देव प्रथम की रानी नोहला देवी द्वारा निर्मित यह मंदिर नागर शैली में निर्मित है जो वास्तु कला की अनुपम कृतिहै।यह मंदिर भगवान शंकर को समर्पित है।

मुख्य मार्ग पर स्थित होने के कारण यहां पहुंचना आसान है। स्वच्छता के मामले में भी मंदिर क्षेत्र अच्छी स्थिति मेंहै। इस क्षेत्र में सिर्फ प्रचार तथा मार्केटिंग का अभाव होने के कारण पर्यटन अपर्याप्त है।

(ई) रानी दमयंती संग्रहालय दमोह–यह संग्रहालय दमोह नगर के मध्य स्थान में ही बना हुआ है। इस संग्रहालय का शुभारंभ 25 अगस्त 1989 ई में तत्कालीन राज्यपाल सरला ग्रेवाल द्वारा किया गया था। यह संग्रहालय एक पुराने किले में बना हुआ है। इस संग्रहालय की 5 वीथिकाओं में कलचुरी काल की विशिष्ट कृतियां प्रदर्शित की गई है।इस संग्रहालय में छठवीं से लेकर 11वीं–12वीं शताब्दी तक की अद्भुत प्रतिमाओं को रखा गया है जिसमें अभिविज्ञान राम,त्रिविक्रम विष्णु, बुद्ध भगवान, हेग्रीव विष्णु अवतार, सूर्य प्रतिमा, नृत्य गणेश, स्वरसुंदरी प्रतिमा आदि प्रमुख है।

जैसा कि ज्ञात है यह संग्रहालय शहर में ही स्थित है अत: यहां पहुंचना आसान है। स्वच्छता एवं सुरक्षा भी शहरी क्षेत्र होने के कारण यहां पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। यहां की मुख्य समस्या इस संग्रहालय का उचित प्रचार–प्रसार ना होना है।

तालिका क्र. 01:– जिले के पर्यटन स्थलों पर संरचनात्मक सुविधाओं का विश्लेषण।

क्र.	स्थान	स्वच्छता	सुरक्षा	आवास	परिवहन	भोजन –पानी	मार्के टिंग
1	बाँदकपुर	अपर्याप्त	औसत	अपर्याप्त	पर्याप्त	औसत	औसत
2	कुण्डलपूर	अच्छा	अच्छा	अच्छा	औसत	अच्छा	औसत
3	सिंग्रामपुर	–	अनुप लब्ध	अनुप लब्ध	अपर्याप्त	अनुप लब्ध	अपर्याप्त
4	नोहलेश्वर मंदिर	पर्याप्त	पर्याप्त	–	अच्छा	औसत	औसत
5	रानी दमयंती संग्राहालय	अच्छा	अच्छा	–	अच्छा	पर्याप्त	अपर्याप्त

जिले में पर्यटन की प्रमुख समस्याएं–ऐसे तो दमोह जिले में बहुत सारे पर्यटन स्थल है जिनमें पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं पर यदि ध्यान दियाजाए तो पता चलता है कि देश तथा प्रदेश में पर्यटन हेतु दमोह जिले का नाम कहीं भी नहीं आता। कुछ प्रमुख समस्याएं हैं जिन्हें सुलझाकर दमोह जिले को पर्यटन मानचित्र पर उचित स्थान दिलाया जा सकता है–

(अ) जिले के पर्यटन स्थलों का उनकी विशेषताओं के साथ ठीक तरह से प्रचार–प्रसार नहीं किया जाना।

(ब) परिवहन साधनों तथा मार्गों का अपर्याप्त विकास।

(स) स्थलों का अविकसित तथा जीर्ण अवस्था में होना।

(द) कई स्थलों पर सुरक्षा बलों की अनुपस्थिति होना जिससे सुरक्षा की समस्या होती है।

(ई) पर्यटकों के लिए अच्छे होटलों तथा अन्य आवासीय सुविधाओं की कमी होना।

पर्यटन विकास हेतु सुझाव–जैसा कि इस अध्ययन से हमें ज्ञात होता है कि अध्ययन हेतु चुने गए पर्यटक स्थलों में प्रत्येक की अपनी अपनी समस्याएं हैं। अत: प्रत्येक स्थान के विकास के लिए निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं–

(अ) बांदकपुर क्षेत्र में पर्यटन विकास हेतु दूर से आने वाले दर्शनार्थियों के लिए उचित आवासीय व्यवस्था की जानी चाहिए तथा मंदिर के द्वार निर्माण का जो प्लान प्रस्तावित है उसे शीघ्र कार्यान्वित किया जाना चाहिए ताकि मंदिर के अंदर होने वाली भीड़–भाड़ को कम किया जा सके और मंदिर के बाहर लगने वाली अस्त–व्यस्त दुकानों से होने वाली असुविधा से बचा जा सके। इसके साथ ही क्षेत्र के विकास के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

(ब) कुंडलपुर क्षेत्र विशाल जैन तीर्थ क्षेत्र है जिसका प्रचार राष्ट्रीय स्तर पर किया जाना चाहिए। साथ ही यहां प्रस्तावित रेल मार्ग निर्माण पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

(स) सिंग्रामपुर एक अपार संभावनाओं वाला पर्यटन क्षेत्र है परंतु यहां पर पर्यटन के विकास के लिए आवश्यक सभी प्रकार की आधारभूत सुविधाओं का अभाव है। अत: यहां पर चहुँमुखी विकास की आवश्यकता है, जिसमें परिवहन, आवास, स्वच्छता, सुरक्षा, पेय जल, प्रचार–प्रसार सभी शामिल है। यहां मुख्य सड़क से पर्यटन स्थलों तक पहुंचने के लिए सड़कों का निर्माण भी किया जाना चाहिए।

(द) नोहलेश्वर मंदिर की प्राचीनता की प्रादेशिक स्तर पर मार्केटिंग की जानी चाहिएतथा इस स्थान पर आयोजित किए गए नोहलेश्वर उत्सव को और भी व्यापक रूप से प्रतिवर्ष आयोजित किया जानाचाहिए।

(ई) रानी दमयंती संग्रहालय दमोह शहर का मुख्य आकर्षण है। शहर के स्कूली तथा महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को इसस्थान केशैक्षणिक भ्रमण हेतु प्रशासन द्वारा व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे इस स्थान का प्रचार हो सके।

निष्कर्ष– पर्यटन की संभावनाओं की बात की जाए तो दमोह जिले में ऐतिहासिक अवशेष, प्राकृतिक सौंदर्य तथा मनोरंजन के साधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है परंतु निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि यह जिला पर्यटन की दृष्टि से अभी पिछड़ा हुआ है।इस अध्ययन में जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध संरचनात्मक सुविधाओं और उनकी कमियों का विश्लेषण किया गया है जिसमें पाया गया कि उचित संरचनात्मक सुधारों और सरकारी योजनाओं के माध्यम से दमोह जिले में पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है। बेहतर सड़क, होटल, स्वच्छता, सुरक्षा और प्रचार–प्रसार से यह जिला एक महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्र बन सकता है।

संदर्भग्रंथ सूची:–

1. Damoh.nic.in
2. www.mpinfo.org
3. जॉनसन धीरज, दमोह दर्शन
4. दैनिक भास्कर
5. दमोह दृष्टि पत्र – 2047
6. Bais Priyanka Sing, role of historical monuments of Bundelkhand region of Madhya Pradesh in tourism development (Jiwaji University Gwalior), 2023

****